विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। –सुफियान सौरी

घटिया और नकली दवाओं से बिगड़ रही है सेहत

केंद्रीय औषधि नियामक की रोजमर्रा में काम आने वाली दवाओं के जाँच में फेल होने पर लोग सकते में है। केंद्रीय औषधि नियामक की माह अगस्त की हाल ही जारी मासिक रिपोर्ट में बताया है बुखार, डायबिटीज, हाई ब्लड प्रेशर, पेट में संक्रमण आदि स्वास्थ्य समस्याओं के लिए जिन दवाओं का आप इस्तेमाल करते हैं, असल में उनकी क्वालिटी खराब है। इतना ही नहीं, बहुत सी दवाएं तो नकली हैं, जिन्हें बड़ी कंपनियों के ब्रांड के नाम से बेचा जा रहा है।

रिपोर्ट के मुताबिक पैरासिटामोल, पैन डी और कैल्शियम सप्लीमेंट सहित 53 दवाएं क्वालिटी चेक में फेल हो गई हैं। क्वालिटी चेक में फेल होने वाली दवाओं में विटामिन सी और डी3 टैबलेट, शेलकल, विटामिन बी कॉम्प्लेक्स, विटामिन सी सॉफ्टजेल, एंटी-एसिड पैन-डी, पैरासिटामोल टैबलेट (आईपी 500 मिलीग्राम), एंटी डायबिटीज दवा ग्लिमेपिराइड और हाई बीपी की दवा टेल्मिसर्टन शामिल हैं। इन दवाओं के उपयोग को लेकर सुरक्षा संबंधी चिंताएं पैदा हो गई हैं। आप दवाई खरीदने के लिए बाजार में जा रहे हैं तो पूरी सावधानी और सतर्कता बरतते हुए दवाइयों की जाँच करके लें और अपनी दवाइयों को डॉक्टर को एक बार जरूर दिखा दें, क्योंकि इन दिनों बाजार में घटिया दवाइयां को असली बता कर खुलेआम बेचा जा रहा है। देश में हर बीमारी के लिए नकली दवाएं उपलब्ध हैं। इन नकली दवाओं की पहचान करना आप और हमारे लिए बेहद मुश्किल और लगभग असंभव है। हमारे देश में अंग्रेजी दवाइयों ने घर घर में अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया है। जिसे देखो अंग्रेजी दवाइयों के पीछे भागता मिलेगा। सामान्य बीमारियों से लेकर असाध्य बीमारियों की दवा आज घरों में मिल जाएगी। इनमें चिकित्सकों द्वारा लिखी दवाइयों के अलावा वे दवाइयां भी शामिल है जो मेडिकल स्टोर्स से बीमारी बताकर खरीदी गई है अथवा गूगल से खोजकर निकाली गई है। ये दवाइयां असली है या घटिया अथवा नकली ये भी आम लोगों को मालूम नहीं है। घटिया दवाइयों का बाजार आजकल खूब फलफूल रहा है। आये दिन घटिया और नकली दवाइयां बरामद करने की खबरें मीडिया में सुर्खियों में पढ़ने को मिल रही है। इन दवाइयों के सेवन से साधारण खांसी बुखार और जुखाम को ठीक होने में एक पखवाड़ा या महीना लग जाता है। इसके बावजूद ऐसी दवाइयां खरीदने में हमें कोई हिचकिचाहट नहीं हो रही है।

सरकार की लाख कोशिशों के बावजूद देश में घटिया और नकली दवाओं पर पूरी तरह लगाम नहीं लगाई जा सकी है, जिसके कारण देश के लाखों लोगों की सेहत सुधरने के बजाय बिगड़ रही है। भारत में नकली, घटिया और अवैध दवाओं का धंधा तेजी से फैल रहा है, जिसकी वजह से रोगियों की जान जोखिम में है। विशेषज्ञों के मुताबिक जो दवाएं धोखाधड़ी से निर्मित या पैक की गई हैं, उन्हें नकली और घटिया दवाएं कहा जाता है क्योंकि उनमें या तो सक्रिय अवयवों की कमी होती है या गलत खुराक होती है। नकली दवाओं के काले-कारोबार पर पुलिस और सरकारी एजेंसियों की छापेमारी की खबरें आये दिन मीडिया की सुर्खियां बनती हैं।

आप दवाई खरीदने के लिए बाजार में जा रहे हैं तो पूरी सावधानी और सतर्कता बरतते हुए दवाइयों की जाँच करके लें और अपनी दवाइयों को डॉक्टर को एक बार जरूर दिखा दें, क्योंकि इन दिनों बाजार में घटिया दवाइयां को असली बता कर खुलेआम बेचा जा रहा है। देश में हर बीमारी के लिए नकली दवाएं उपलब्ध हैं।

अनेक बार लाखों-करोड़ों रुपयों की घटिया दवाएं खपत होने के बाद सरकारी एजेंसियों की नज़र में आती है। बहुदा ऐसा भी देखा जाता है जब तक इन दवाओं की घटिया होने की रिपोर्ट आती है तब तक ये बाजार में बिक चुकी होती है। देश की राजधानी दिल्ली भी घटिया दवाओं के सरेआम इस्तेमाल से अछूती नहीं है। हाल ही में दिल्ली के उपराज्यपाल वी.के. सक्सेना ने राष्ट्रीय राजधानी के सरकारी अस्पतालों में सप्लाई की जा रही खराब गुणवत्ता की दवाओं की जांच केंद्रीय जांच ब्यूरो से कराने की सिफारिश की है।

उपराज्यपाल ने कहा कि यह चिंता का विषय है कि निजी और सरकारी लैब में टेस्ट की गई ये दवाएं अच्छी गुणवत्ता की नहीं निकलीं। उन्होंने कहा कि ये दवाएं दिल्ली के सरकारी अस्पतालों में लाखों मरीजों को दी जा रही हैं। इससे पूर्व विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भारत में कैंसर और लीवर की नकली की बिक्री को लेकर अलर्ट जारी किया था। ड्रग कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया ने सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के ड्रग कंट्रोलर को दो दवाओं लीवर की दवा डिफिटेलियो और कैंसर की दवा (इंजेक्शन) के नकली वर्जन की बिक्री और डिस्ट्रिब्यूशन पर कड़ी निगरानी रखने का निर्देश दिये।

भारत दवाओं का सबसे ज्यादा प्रोडक्शन करने वाला देश है। मगर देशवासियों को अच्छी गुणवत्ता की दवाएं नहीं मिल पा रही हैं। इंडिया ब्रांड इक्विटी फाउंडेशन के मुताबिक, भारत में फार्मा इंडस्ट्री बीते कुछ सालों में तेजी से बढ़ रही है। इसमें साल 2020 से 2025 के बीच 37 प्रतिशत कंपाउंड एनुअल ग्रोथ का अनुमान जताया गया है। साल 2024 में 10-11 प्रतिशत बढ़ोतरी का अनुमान है। एक रिपोर्ट के मुताबिक सबसे अधिक मात्रा में दवाइयां बनाने में भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा देश है। देश में सबसे तेज गति से बढ़ रहे इस कारोबार के 55 बिलियन डॉलर तक पहुंचने के साथ ही नकली और घटिया की दवाओं का अवैध कारोबार भी बढ़ रहा है जिससे लोगों की जान पर खतरा बढ़ता जा रहा है। एसोचैम ने अपनी एक रिपोर्ट में देश में बनने वाली कुल दवाओं का 25 प्रतिशत नकली और खराब गुणवत्ता वाली दवाएं बनने और बिकने का खुलासा किया था, जो विश्व की कुल नकली दवाओं का 35 प्रतिशत है। देश में नकली और घटिया दवाओं की बाढ़ आ गई है। आये दिन देश के विभिन्न भागों में घटिया और अमानक दवाऐं पकड़ी जा रही है। एक मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक भारत सहित विभिन्न देशों में नकली दवाओं का कारोबार लगभग तीस अरब डॉलर तक पहुंच गया है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, भारत नकली दवाओं का दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा बाजार है। भारत में 25 फीसदी के करीब दवाइयां नकली है।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल शनिवार 5 अक्टूबर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

अश्विन मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2081, स्वाती नक्षत्र रात्रि 9:53 तक, विष्कुम्भ योग रविवार प्रातः 6:03 तक, तैतिल करण सायं 6:40 तक, चन्द्रमा आज तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-तुला, मंगल-मिथुन, बुध-कन्या, गुरू-वृष, शुक्र-तुला, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 9:33 तक है। रवियोग रात्रि 9:33 से आरम्भ होगा। आज रवि उल सानि मु.मास 4 आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:53 से 9:20 तक, चर 12:15 से 1:43 तक, लाभ-अमृत 1:16 से 4:38 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:25, सूर्यास्त 6:06

मेष
घर-परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद दूर होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। नौकरीपेशा व्यक्तियों को बाहर जाना पड़ सकता है।

सिंह
नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है। आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

कन्या
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक रहेगी।

वृश्चिक
आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

धनु
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मकर
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

जेल में उत्सव

राजेन्द्र जोशी

अपराधी को संभलने एवं अपने किए पर प्राश्चित करने का स्थान हमारे देश की जेले रहीं हैं । हमारे देश में ऐसे अनेक उदाहरण है जहां जेल में रहकर विद्वान बने हैं, बहुत सारे पंडित-मौलवी भी जेल में बंद रहते हुए सिद्ध हो गए। किसी बंदी को जेल में इसीलिए भेजा जाता है कि उसे अपने किए पर पछतावा हो। वह सद्कर्म करते हुए अपराध पर पछतावा करें और जेल प्रवास में रहकर सुखमय एवं समाज में अपनी दूषित छवि को फिर से उजली बना सके।

जेलों में सुधार के लिए वर्षों पहले एक अभियान चलाया गया था, लेकिन उस अभियान के दौरान भी जाति आधारित काम करने की बाध्यता पर विचार नहीं किया गया। सुप्रीम कोर्ट ने स्वत: संज्ञान लेते हुए नागरिकों को रक्षा एवं सुरक्षा प्रदान करते हुए कैदियों में जातिगत भेदभाव नहीं रखने का स्पष्ट आदेश दिया है। हमारे देश में सुप्रीम कोर्ट नागरिकता के पक्ष में सदैव खड़ा रहता है। इस फैसले के बाद सुप्रीम कोर्ट ने सभी राज्यों को तीन महीने में जेल मैन्युअल में जाति का कॉलम हटाने का आदेश दिया है। और यह भी कहा है कि तीन महीने बाद सुप्रीम कोर्ट इसकी समीक्षा खुद करेगा। यह फैसला नागरिकों को भरोसा और विश्वास दिलाता है। अनेक बार जेलों में बंदियों पर अत्याचार होना, झूठे मुकदमे दायर करना, और मानवीय प्रताड़ना के समाचार, समाचार पत्रों में प्रकाशित होते हैं। भारतीय जेलों की दुर्दशा किसी से छुपी हुई नहीं है।

सरकारों द्वारा कहा तो यह जाता रहा है कि जेल बंदी सुधार गृह के रूप में पहचाने जाने चाहिए। लेकिन हुआ उल्टा । माननीय सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले से जेलों में सुधार की गुंजाइश भी बनती है।

सरकारों को चाहिए की सच में जेलों को बंदी सुधार गृह के रूप में काम हो । बंद कैदियों के नागरिक अधिकारों की रक्षा करते हुए उन्हें मूल अधिकारों से वंचित नहीं रखा जाए, जैसे चिकित्सा, शिक्षा, रोजगार एवं आदमी को जीने का अधिकार शत प्रतिशत जेल में भी मिले। ऐसी कल्पना ही नहीं बल्कि वास्तविकता में सुनिश्चित किया जाना चाहिए। जाति आधारित काम देना भारतीय संविधान की भावना के खिलाफ है। मैं पत्रकार सुकन्या शांता जी का स्वागत करना चाहूँगा, जिन्होंने हमारे माननीय सुप्रीम कोर्ट के संज्ञान में लाने वाला आलेख दिया। भारत में जातीय भेदभाव की समस्या से हम वर्षों से लड़ते आ रहे हैं।

जातिवाद के आधार पर व्यक्ति से काम कराना, भारत का संविधान भी इसकी इजाजत नहीं देता। हमारी सरकारे बार-बार संविधान संशोधन करती है, लेकिन अब ऐसा लगता है कि संविधान संशोधन पर विचार करने का काम कुछ नौकरशाह के हाथों में रह गया है। अगर सांसद संविधान को लेकर बैठे और संविधान संशोधन करने से पहले ऐसे विषयों की तरफ ध्यान लगाए तो इस तरह के काले कानून हमारे देश से बहुत जल्द विमुक्त हो जायेंगे। मैं एक बार फिर पत्रकार सुकन्या शांता और माननीय सुप्रीम कोर्ट के प्रति आभार प्रकट करता हूँ।

–राजेन्द्र जोशी,
साहित्यकार- शिक्षाविद्

समाज के लिए बहुत घातक है ''आत्महत्या'' जैसी घटनाएं

मिश्रीलाल पंवार

10 सितम्बर को दुनिया भर के जागरूक लोगों ने विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस मनाया। इस दिन अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।आत्महत्या रोकथाम पर चर्चाएं की गई। विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस को लेकर जोधपुर के मेडिकल कॉलेज व महात्मा गांधी हॉस्पिटल में भी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मनोरोग विशेषज्ञों ने लगातार बढ़ रही सुसाइड की घटनाओं को लेकर चर्चा की। इसे कम करने और लोगों को डिप्रेशन से मुक्त करने के लिए अपने-अपने विचार रखे। चिकित्सा कर्मचारियों को डिप्रेशन से प्रभावित लोगों की मदद करने की शपथ भी दिलाई गई।

यूं देखा जाए तो 'आत्महत्या' पर वर्ष में केवल एक दिन चर्चा करना काफी नहीं है। आत्महत्या जैसी घटनाएं समाज के लिए लिए बहुत बड़ा चिंता का विषय है। इसकी असली पीड़ा वह जान सकता है, जिसके घर के किसी सदस्य ने आत्महत्या करके परिजनों के जीवन में अंधेरा कर दिया।

आजकल बदलते दौर में हर व्यक्ति किसी ना किसी परेशानी को लेकर चिंता में घिरा रहता है। आर्थिक तंगी, घरेलू कलह, कर्ज, एकाकी जीवन, बेरोजगारी तथा प्रेम प्रसंग में असफल रहने वाला व्यक्ति प्राय: डिप्रेशन में चला जाता है । जब डिप्रेशन चरम पर पहुंच जाता है तो आत्महत्या जैसे कदम उठा लेता हैं। पुलिस ऐसे मामले में रटा-रटाया जुमला सुना देती है कि आत्महत्या का कारण अज्ञात है। इसका परिणाम यह होता है कि समाज तक सच्चाई नहीं पहुंच पाती।

जोधपुर जिले की बात करें तो यहां आत्महत्या के बिना कोई दिन नहीं गुजरता। तालाब, नाडी, झील, टांके में कूदकर जान देने तथा रेल के आगे कूद कर जान देने के मामले तो आत्महत्या की फ़ेहरिस्त में शामिल ही नहीं हो पाते।

तालाब, नाडी, नहर बावड़ी में डूबने के मामलों में पुलिस का रटा-रटाया जुमला है कि पांव फिसलने से पानी में गिर गया। डूबने से मौत हो गई। इससे ज्यादा गहराई मे पुलिस जाना भी नहीं चाहती। इसी प्रकार रेल से कट कर मरने वालों की संख्या भी कम नहीं होती। इसमें भी पुलिस का तकिया कलाम है, ''रेल पटरियों को पार करते ट्रेन की चपेट में आ गया।''

रोज शवों को देखने वाले पुलिसकर्मी इतने संवेदनहीन हो गए है कि वे आत्महत्या जैसे मामले की गंभीरता से नहीं लेते। वास्तविकता के करीब जाना ही नहीं चाहते। इसी माह जोधपुर में आत्महत्या के जितने मामले सामने आए हैं,वे चौंकाने वाले है। माह की शुरुआत में चौपासनी हाउसिंग बोर्ड सेक्टर 9 में रहने वाले युवक नरेन्द्र सिंधी ने अपने घर में फंदा लगाकर जान दे दी। पुलिस को आत्महत्या का कारण पता नहीं चला।

इसी प्रकार 9 सितम्बर दो युवकों ने खुदकुशी कर ली। आत्महत्या का कारण पता नहीं चला है। इस बारे में लूणी थाना पुलिस ने मर्ग की कार्रवाई की। पुलिस ने शवों को कार्रवाई के बाद परिजन के सुपुर्द कर दिया। पुलिस के अनुसार शंकरलाल यहां कांकाणी में रहता था। वह मजदूरी करता था। उसने अपने घर में फंदा लगाकर जान दे दी। वहीं लूणी के सिणली निवासी भीखाराम भील ने घर में फंदा लगाकर अपनी जान दे दी। पुलिस को आत्महत्या का कारण पता नहीं चला। इसके दूसरे दिन 10 सितम्बर को पूर्वी पाल विस्तार शोभावतों की ढाणी में रहने वाली एक किशोरी ने अपने घर में फंदा लगाकर खुदकुशी कर ली।

चौपासनी हाऊसिंग बोर्ड पुलिस ने बताया कि मूलत : बिहार हाल पूर्वी पाल विस्तार योजना, शोभावतों की ढाणी निवासी तेज बहादुर चौधरी की 16 वर्षीय पुत्री प्रियंका ने घर में कपड़े का फंदा बनाकर पंखे के हुक में लटक कर अपनी जान दे दी। उसके आत्महत्या का कारण पता नहीं चला।

12 सितम्बर को मसूरिया क्षेत्र टीवी टावर रोड पर रहने वाले एक युवक राकेश ने घर पर फांसी का फंदा बनाकर आत्महत्या कर ली। उसके आत्महत्या का कारण पता नहीं चला है। 13 सितम्बर को बलदेवनगर मसूरिया क्षेत्र में रहने वाले पच्चास वर्ष के अधेड़ कानाराम भील ने अपने घर पर फंदा लगाकर खुदकुशी कर ली। आत्महत्या का कारण पता नहीं चला है।

18 सितम्बर को निकटवर्ती झंवर स्थित लूणावास चारणान गांव में केवलराम मेघवाल नामक युवक ने अपने घर पर फंदा लगाकर खुदकुशी कर ली।उसने आत्महत्या किस कारण की इस बारे में पता नहीं चला है।

19 सितम्बर को सूरसागर स्थित फिदूसर भाकरी में पत्थर की खान में भरे पानी में डूबने से 55 साल के प्रकाश मेघवाल की मौत हो गई। पुलिस का कहना है वह संभवत: पैर फिसलने से गिरा होगा।

20 सितम्बर को शहर के माता का थान स्थित भाकरबेरा, बासनी तंबोलिया में रहने वाले बासनी तंबोलिया निवासी 28 साल के कवि खां ने अपने घर में फंदा लगाकर खुदकुशी कर ली। उसके आत्महत्या का कारण नहीं बताया गया।

21 सितंबर को शहर के भदवासिया में किराए के कमरे में रहने वाले एक युवक राधेश्याम ने फंदा लगाकर खुदकुशी कर ली। वह यहां पर मजदूरी करता था। उसके आत्महत्या का कारण पता नहीं चला है।

इसके दूसरे दिन 22 सितम्बर को मानसिक अवसाद में युवती ने डीजल डालकर किया आत्मदाह कर लिया। बोरानाडा पुलिस के अनुसार गांगाणा फांटा, नायरा पेट्रोल पंप के पास में रहने वाली 19 साल की बिस्मिल्ला ने 20 सितंबर को मानसिक अवसाद में आकर खुद पर डीजल डालकर आग लगा दी थी। जिस पर उसे झुलसी हालत में एमजीएच में भर्ती करवाया गया। मगर उसकी मौत हो गई। यह तो फांसी खाकर आत्महत्या करने वालों की बात है, इसके अलावा पानी में डूबने तथा रेल से कटने की घटनाएं भी कम नहीं हुई है।

मनोरोग विभागाध्यक्ष डॉ. संजय गहलोत ने कहा- आत्महत्या करने वाला डिप्रेशन से ग्रसित होता है। सुसाइड से व्यक्ति की मनोदशा का संबंध होता है। निराशा में डूब कर स्वयं अपनी जान देने की प्रवृत्ति आजकल बहुत ज्यादा बढ़ गई है। इसने हर उम्र और हर वर्ग को अपनी चपेट में ले रखा है।

इसके लिए लोगों का जागरूक होना जरूरी है। जन जागरुकता से एमडीएम हॉस्पिटल के अधीक्षक डॉ. नवीन किशोरिया का कहना है कि वर्तमान परिवेश तनावपूर्ण हो चुका है। व्यक्ति पर किसी प्रकार का दबाव होने से डिप्रेशन में चला जाता है। इसके चलते परिजनों को डिप्रेशन के रोगी से हमेशा बात करते रहना चाहिए है।

उसके साथ ऐसा सद्व्यवहार करना चाहिए कि रोगी का तनाव दूर हो जाए। प्रयास करने से इंसान डिप्रेशन से फ्री हो सकते है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)
-मिश्रीलाल पंवार, जोधपुर

दो दिवसीय आभानेरी फेस्टिवल का आगाज, लोक गीतों पर थिरके विदेशी मेहमान

दो दिन तक आभानेरी फेस्टिवल में देशी व विदेशी सैलानी राजस्थानी संस्कृति और अतिथि-सत्कार का आनंद लेंगे

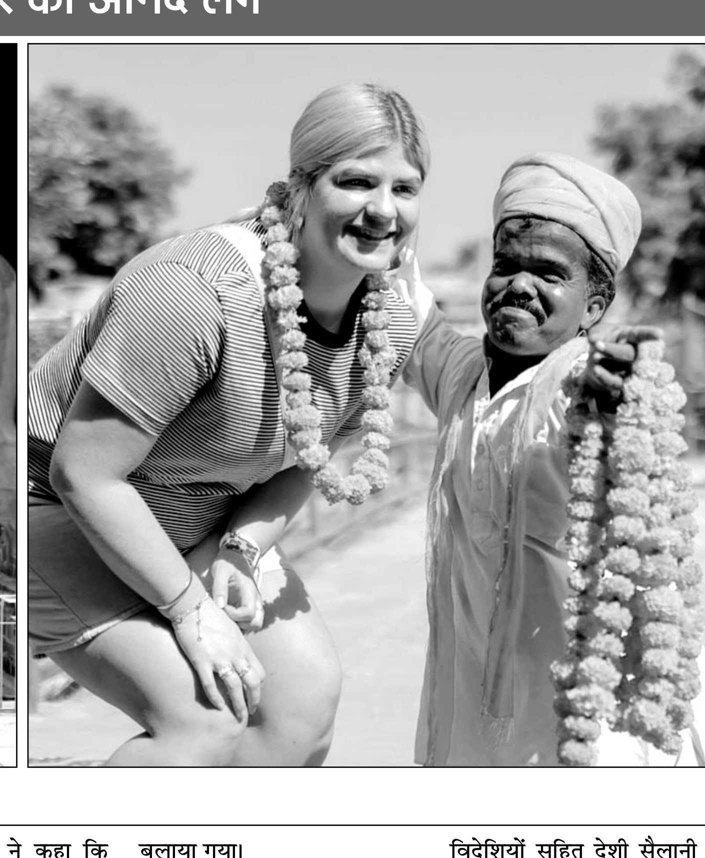

दौसा में दो दिवसीय आभानेरी फेस्टिवल में विदेशी पर्यटकों ने लुत्फ उठाया।

दौसा, (निसं)। राजस्थान पर्यटन विभाग और दौसा जिला प्रशासन व भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के संयुक्त तत्वावधान में हैरिटेज टूरिज्म को चार चांद लगाने वाले दो दिवसीय आभानेरी फेस्टिवल का आगाज आभानेरी ग्राम में शुक्रवार को हुआ।

■ पर्यटन विभाग, दौसा जिला प्रशासन व भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हो रहा है फेस्टिवल

दो दिन तक यहां पर देशी व विदेशी सैलानी राजस्थानी संस्कृति और अतिथि-सत्कार का आनंद लेंगे। राजस्थानी रंग में रंगे सैलानियों ने यहां वीर रस से भरपूर कच्छी घोड़ी नृत्य पर ताल से ताल मिलाई तो बहरूपिया कला, कठपुतली कलाकारों व सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने देशी- विदेशी सैलानियों का मन मोह लिया।

पर्यटन विभाग के उपनिदेशक उपेंद्र सिंह शेखावत ने कहा कि आभानेरी ग्राम में देशी-विदेशी सैलानियों का स्वागत परम्परागत तरीके से माला पहनाकर व तिलक लगाकर किया गया।

उन्होंने कहा कि पहले दिन करीब 400 से 500 विदेशी सैलानियों की आमद हुई जबकि विद्यार्थियों शैक्षणिक ट्यूर व घरेलू पर्यटक भी यहां खासी संख्या में पहुंचे। उपेंद्र सिंह शेखावत ने कहा कि इस फेस्टिवल के दौरान पर्यटन विभाग द्वारा यहां लखेरों, कुम्हार व लोहारों को हुनर दिखाने के लिए बुलाया गया।

विदेशियों ने लाख की चूड़ियों को बनते देखा, कुम्हार के चलते चाक व लोहारों के उत्पादों को देख विदेशी काफी प्रसन्न नजर आए।

उन्होंने स्थानीय हुनरमंदों से खरीददारी भी की। उन्होंने बताया कि इस फेस्टिवल के लिए जरिए हैरिटेज टूरिज्म को प्रमोट किया जाता है। उन्होंने कहा कि देशी-विदेशी सैलानियों को यहां पर कैमल कोर्ट की व्यवस्था है।

जिसके जरिए वे ग्राम-भ्रमण पर निकलते हैं, कैमल कोर्ट को विदेशियों सहित देशी सैलानी भी काफी पसंद कर रहे हैं।

यहां पर ग्राम में नुक्कड नाटकों का भी प्रदर्शन किया गया। शेखावत ने बताया कि आभानेरी ग्राम में दसवीं शताब्दी का हर्षद माता मंदिर व उसके पास ही विश्वविख्यात चांद बावड़ी सैलानियों के लिए खासी आर्कषण का केंद्र है।

सवेरे शाम तक सैलानी ग्राम दर्शन, चांद बावड़ी व माता के मंदिर के दर्शन करते हैं, वहीं शाम को सात से नौ बजे सांस्कृतिक संध्या का आयोजन उन्हें मंत्रमुग्ध कर देता है।